13वां जैन विद्या दीक्षांत समारोह संपन्न
ज्ञानी के ज्ञान का सार है अहिंसा : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 14 जून।

जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संस्औति संकाय के द्वारा 13वें जैन विद्या दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन सुधर्मा सभा में युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर चुरू जिला कलेक्टर औष्णाकांत पाठक विशेष रूप से उपस्थित थे। इस दीक्षांत समारोह में जैन विद्या के 9 भाग को उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को जैन विद्या विज्ञ की उपाधि से सम्मानित किया गया। जैन विद्या विज्ञ परीक्षा में वर्ष 2007-08 में नोखा की खुशबू ललवाणी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जिसे स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि ज्ञानी के ज्ञान का सार है अहिंसा अहिंसा की साधना के लिए समता की साधना आवश्यक है अर्थात व्यक्ति समभाव में रहे। आदमी राग-द्वेश से बचने का प्रयास करे।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि ज्ञान के समान कोई पवित्र वस्तु नहीं है। ज्ञान को प्राप्त करना है तो उसके लिए जरूरी है कि गुरुओं को प्रणाम करो, जिज्ञासा करो, और गुरुओं की सेवा करो तब व्यक्ति को तत्वदर्शी गुरु से ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान प्राप्त करने का पूरा संकल्प हो, ज्ञान प्राप्त करने का तरीका ठीक हो, अभ्यास हो तो आदमी ज्ञान को प्राप्त कर सकता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने दो प्रकार की विद्याओं का उल्लेख करते हुए कहा कि दो प्रकार की विद्याओं में एक है लौकिक विद्या और दूसरी अलौकिक विद्या। व्यापार व अर्थ अर्जन की दृष्टि से जो विद्या पढी जाती है वह लौकिक विद्या है और जो अध्यात्म विद्या है वह अलौकिक विद्या या लोकोत्तर विद्या है। लौकिक विद्या को पढना आवश्यक है तो अलौकिक विद्या का भी ज्ञानार्जन करना चाहिए। इसी प्रकार नास्तिक विद्या और आस्तिक विद्या है। नास्तिक विद्या के अनुसार न आगे है न पीछे है। आस्तिक विद्या के अनुसार आत्मा शाश्वत है और पुण्य पाप का फल मिलता है। आस्तिक दर्शन ने जो विचारधारा दी वह विचारधारा एक आदमी को सही रास्ते पर ले जाने वाली होती है। गलत काम करने से नरक में जाऊंगा और अच्छे काम करूंगा तो स्वर्ग में जब यह भावना आती है तो आदमी गलत कार्य से बचने की संकल्प शक्ति को पुष्ट कर लेता है। जैन विद्या का अध्ययन एक आस्तिक विचारधारा का सिद्धांत है। विद्यार्थी केवल पैसे से संपन्न न बने जैन विद्या के क्षेत्र में विशेश स्थान प्राप्त करने का प्रयास करें, जिससे उनके जीवन में मंगल और कल्याण हो सकता है। उन्होंने जैन विद्या विज्ञ उपाधि धारकों को भविश्य में विशेश ज्ञान अर्जित करने का लक्ष्य बनाने की प्रेरणा दी।

चुरू जिला कलेक्टर औष्णाकांत पाठक ने कहा कि जब मैं आया तो मुझे एकाएक ऐसा लगा कि जैसे मैं अपने गुरुकुल में लौट आया हूं जिस विश्वविद्यालय में मैं पढता था वहां एक प्रतिक चिन्ह बना हुआ था जिसका अर्थ था जितनी शाखाएं उतने वृक्ष। हर शाखा वृक्ष बन जाए उसी वृक्ष में सार्थकता है। शिक्षक बहुत मिल जाते हैं ज्ञान लेने वाले और ज्ञान देने वाले बहुत हैं।

उन्होंने जैन विद्या परीक्षार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप जिस दुनिया में जाएंगे वहां पर यहां से आप बहुत कुछ ज्ञान के छोटे-छोटे सूत्र ले जाएंगे। जिससे आपके भीतर संस्कारों के बीज पल्लवित एवं पुश्पित होंगे। जो बड़े वृक्ष बनकर लोगों को छाया देते रहेंगे।

उन्होंने जैन दर्शन की व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दो धारा की विभुतियां आज विश्व में सार्थक बनी एक है भगवान बुद्ध और दूसरे हैं महात्मा गांधी किंतु इनकी विचारधारा का निनानवें प्रतिशत भाग यदि कहीं से निकलकर आता है तो वह जैन दर्शन से आता है। क्योंकि जैन दर्शन युग का क्रांतिकारी दर्शन है।

मुनि जयंत कुमार ने कार्यक्रम के प्रारंभ में मंच संचालन करते हुए कहा कि जैन विश्व भारती के परिसर और जैन विद्या परीक्षाओं की देश भर में चर्चाओं को सुनते हैं तो हम आचार्य तुलसी के औतृत्व को भूल नहीं पाते हैं। आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था कि हमारे बीच में न रहते हुए भी आज साक्षात है। उनके चिंतन और निर्णय का ही परिणाम है कि जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संस्औति संकाय के द्वारा सम्पूर्ण देश में जैन विद्या परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

उन्होंने कहा कि युवा, परिवार, समाज और राष्ट्र की धूरी है। जिस राष्ट्र का युवा संस्कारी, पुरुषार्थी एवं अपनी जीवन चर्या में आध्यात्मिकता का पुट देने वाला होता है, वही राश्ट्र विकसित बन सकता है। जैन विद्या परीक्षाओं में भाग लेने वाला प्रत्येक विद्यार्थी इन गुणों को आत्मसात करता है।

विज्ञ उपाधि प्राप्त विद्यार्थियों के मंगलाचरण से प्रारंभ हुए इस गरिमापूर्ण समारोह में समण संस्औति संकाय के निदेशक जिनेन्द्र कोठारी ने आगंतुकों का स्वागत किया एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ, युवाचार्यश्री महाश्रमण का आभार जताया। उन्होंने चुरु कलेक्टर औष्णकांत पाठक का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनका साहित्य के द्वारा सम्मान किया। इस मौके पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के सहसंयोजक कमल बैद, स्थानीय तेरापंथ सभा के मंत्री दीपचन्द सुराणा, स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री ने श्री पाठक को साहित्य भेंट किया। दीक्षांत समारोह के प्रायोजक श्री मालचन्द बैंगानी का साहित्य के द्वारा सम्मान निदेशक जिनेन्द्र कोठारी ने किया। जैन विश्व भारती के उपमंत्री विजयसिंह चौरड़िया, संकाय के विभागाधिपति रतनलाल चौपड़ा विशेश रूप से उपस्थित थे। उपाधि वितरण का संचालन बीकानेर-नागौर के आंचलिक संयोजक महेन्द्र संचेती ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ से चुरु कलेक्टर का विशेष वार्तालाप

''विचार निर्विचार'' औति ने मुझे आस्तिक बनाया : के.के. पाठक

लाडनूं, 14 जून।

जैन विद्या दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर जैन विश्व भारती पहुंचे चुरू कलेक्टर औष्णाकांत पाठक ने राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शनों को सौभाग्य वर्धक बताते हुए कहा कि मैं पहले नास्तिक था। जब बीकानेर में सांखला प्रिंटर्स के यहां पर आपकी औति ''विचार निर्विचार'' को पढा तो आस्था जागृत हुई। साधु संतों से दूर रहता था पर उस औति ने आपके दर्शन करने की उत्कंठा पैदा कर दी। आचार्य महाप्रज्ञ से हुई संक्षिप्त वार्तालाप में जब अनेकांत पर जिज्ञासा रखी तो आचार्य प्रवर ने विस्तार से अनेकांत सिद्धांत पर प्रकाश डाला।

के.के. पाठक ने करीब 5 घंटों तक जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने परिसर की अनमोल धरोहर तुलसी कला प्रेक्षा को सत्यं, शिवं, सुन्दरम् का अनूठा रूप बताया। तुलसी कला प्रेक्षा स्थित प्राचीन पाण्डुलिपियों, साधु-साध्वियों के द्वारा निर्मित चित्रकला, काष्ठ कला, सूक्ष्म लिपि कला एवं कैंची कर्टींग से दर्शाये गये भगवान महावीर जीवन दर्शन को निहारकर सुखद अनुभूति की। पाठक ने वर्धमान ग्रंथागार में पुस्तकों के विशाल भण्डार को देख आश्चर्य प्रकट किया। उन्होंने ग्रंथागार में करीब 90 मिनट बिताये और जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में जैन विद्या विभागाध्यक्ष समणी डॉ. चैतन्यप्रज्ञा के द्वारा प्रदत प्रत्येक जानकारी को ध्यान से सूना। के.के. पाठक के कार्यक्रम को सफल बनाने में जब्बर चिंडालिया का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

संकाय करे जैन विद्या प्रशिक्षक तैयार : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 14 जून।

आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संस्औति संकाय के द्वारा आयोजित जैन विद्या आंचलिक संयोजकों की कार्यशाला को संबोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जैन विद्या की सेवा करना अपने आप में महत्त्वपूर्ण कार्य है। सभी को जैन विद्या के विकास में अपने श्रम एवं समय का नियोजन करना चाहिए। उन्होंने संकाय के कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि संकाय को भविष्य में जैन विद्या प्रशिक्षक तैयार करने पर ध्यान देना चाहिए।

संकाय के निदेशक जिनेन्द्र कोठारी के नेतृत्व में पहुंचे आंचलिक संयोजक, केन्द्र व्यवस्थापक, जैन विद्या विज्ञ उपाधि धारक विद्यार्थियों का परिचय प्राप्त करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जैन विद्या अध्यापन से संबंधित आने वाली कठिनाइयों पर केन्द्र के द्वारा भी ध्यान दिया जायेगा। इस मौके पर मुनि जयंत कुमार ने कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में चले चिंतन मंथन की जानकारी दी।